सहस्त्राब्दियों के संघर्ष, आस्था और राष्ट्रीय स्वाभिमान का जीवंत प्रतीक : सोमनाथ स्वाभिमान यात्रा

सोमनाथ : केवल मंदिर नहीं, भारतीय आत्मा का प्रतीक, राष्ट्र चेतना के पुनर्जागरण का महाअभियान है स्वाभिमान यात्रा , संस्कृति मंत्रालय और केंद्र सरकार अभिनंदन के पात्र

राजेश कुमरावत सार्थक

दैनिक उज्जैन रजत

भारत की सनातन चेतना में कुछ तीर्थ ऐसे हैं, जो केवल पूजा-अर्चना के केंद्र नहीं, बल्कि राष्ट्र की आत्मा, अस्मिता और सांस्कृतिक स्वाभिमान के जीवंत प्रतीक बन जाते हैं। प्रभु सोमनाथ का पावन धाम उन्हीं दिव्य स्थलों में से एक है। समुद्र तट पर स्थित यह ज्योतिर्लिंग सदियों से भारत की आध्यात्मिक शक्ति, सांस्कृतिक निरंतरता और अदम्य आत्मबल का प्रतीक रहा है।

सोमनाथ का इतिहास केवल एक मंदिर का इतिहास नहीं, बल्कि उस सनातन चेतना का इतिहास है जिसने बार-बार आक्रमण सहकर भी स्वयं को पुनः स्थापित किया। यह वही भूमि है जहां विदेशी आक्रांताओं ने केवल पत्थरों को नहीं तोड़ा, बल्कि भारत की आत्मा को चोट पहुंचाने का प्रयास किया। किंतु हर बार भारत की आस्था पहले से अधिक तेजस्विता के साथ पुनर्जीवित होकर खड़ी हुई।

1026 ईस्वी में महमूद गजनवी द्वारा सोमनाथ मंदिर पर किया गया आक्रमण भारतीय इतिहास की उन घटनाओं में से एक है, जिसने पूरे राष्ट्र की चेतना को झकझोर दिया था। मंदिर की अपार संपदा को लूटने और सनातन आस्था को कुचलने के उद्देश्य से हुए इस विध्वंस के बावजूद भारत की आध्यात्मिक शक्ति पराजित नहीं हुई।

सोमनाथ का मंदिर अनेक बार टूटा, किंतु हर बार पुनः निर्मित हुआ। यह पुनर्निर्माण केवल स्थापत्य का पुनरुत्थान नहीं था, बल्कि भारतीय आत्मगौरव और सांस्कृतिक चेतना का पुनर्जन्म था। यही कारण है कि ÷सोमनाथ स्वाभिमान पर्व÷ केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि सहस्त्र वर्षों के संघर्ष, तप, त्याग और राष्ट्रीय स्वाभिमान के स्मरण का महापर्व बन गया है।

8 से 11 जनवरी 2026 तक आयोजित ÷सोमनाथ स्वाभिमान पर्व÷ उस ऐतिहासिक अवसर का प्रतीक है, जब सोमनाथ पर हुए पहले आक्रमण के एक हजार वर्ष पूर्ण हुए। यह पर्व भारत की सभ्यतागत यात्रा, सांस्कृतिक जीवटता और राष्ट्रीय पुनर्जागरण को नई पीढ़ी तक पहुंचाने का प्रयास है।

गुजरात स्थित ऐतिहासिक सोमनाथ मंदिर में आयोजित इस चार दिवसीय उत्सव में सांस्कृतिक कार्यक्रम, महाआरती, शौर्य यात्रा और विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों के माध्यम से भारत की गौरवगाथा को स्मरण किया जा रहा है। यह आयोजन राष्ट्र को यह संदेश देता है कि भारत की संस्कृति को मिटाने का हर प्रयास अंततः असफल हुआ है ।

÷सोमनाथ स्वाभिमान यात्रा-2026÷ के माध्यम से मध्यप्रदेश ने इस राष्ट्रीय अभियान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा रानी कमलापति रेलवे स्टेशन से 1100 श्रद्धालुओं के प्रथम जत्थे को विशेष ट्रेन के माध्यम से हरी झंडी दिखाकर रवाना करना केवल एक प्रशासनिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि सनातन संस्कृति और राष्ट्रीय गौरव के प्रति प्रतिबद्धता का प्रतीक है।

मध्यप्रदेश के विभिन्न जिलों से श्रद्धालुओं की सहभागिता यह दर्शाती है कि सोमनाथ केवल गुजरात का तीर्थ नहीं, बल्कि सम्पूर्ण भारत की सांस्कृतिक चेतना का केंद्र है। दिल्ली सहित अन्य राज्यों द्वारा भी विशेष यात्राओं और श्रद्धालुओं के जत्थों का आयोजन राष्ट्रीय एकात्मता की अद्भुत मिसाल प्रस्तुत करता है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल ने सोमनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण का संकल्प लिया। यह निर्णय केवल धार्मिक आस्था का विषय नहीं था, बल्कि स्वतंत्र भारत के सांस्कृतिक आत्मसम्मान की पुनर्स्थापना का प्रतीक था। 1951 में भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद द्वारा मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा में शामिल होना भारतीय इतिहास का अत्यंत महत्वपूर्ण क्षण था। उन्होंने स्पष्ट कहा था कि कोई भी राष्ट्र अपनी सांस्कृतिक जड़ों से कटकर महान नहीं बन सकता। सोमनाथ का पुनर्निर्माण इसी राष्ट्रीय चेतना और आत्मगौरव का उद्घोष था।

आज जब वैश्विक संस्कृति और आधुनिकता के प्रभाव में नई पीढ़ी अपने इतिहास और सांस्कृतिक मूल्यों से दूर होती दिखाई देती है, तब ÷सोमनाथ स्वाभिमान यात्रा÷ जैसे आयोजन अत्यंत प्रासंगिक हो जाते हैं। यह यात्रा केवल तीर्थाटन नहीं, बल्कि इतिहास, संघर्ष और सांस्कृतिक गौरव से नई पीढ़ी का परिचय कराने का अभियान है।

सोमनाथ का शिखर यह संदेश देता है कि भारत केवल राजनीतिक सीमाओं से बना राष्ट्र नहीं, बल्कि हजारों वर्षों की आध्यात्मिक चेतना से निर्मित एक जीवंत सभ्यता है। यह यात्रा युवाओं को यह प्रेरणा देती है कि वे अपने इतिहास को जानें, अपनी संस्कृति पर गर्व करें और राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका निभाएं।

सोमनाथ स्वाभिमान पर्व और यात्रा जैसे भव्य आयोजन के लिए भारत सरकार, संस्कृति मंत्रालय तथा सभी सहभागी संस्थाएं अभिनंदन और साधुवाद की पात्र हैं। यह पहल केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि भारत की सभ्यतागत चेतना को पुनः जागृत करने का राष्ट्रीय प्रयास है।

ऐसे आयोजन भारत की सांस्कृतिक विरासत को नई पीढ़ी तक पहुंचाने के साथ-साथ विश्व को यह संदेश भी देते हैं कि भारत की आत्मा आज भी उतनी ही जीवंत और शक्तिशाली है, जितनी हजार वर्षों पूर्व थी। सोमनाथ का इतिहास हमें यह सिखाता है कि आस्था को दबाया जा सकता है, किंतु समाप्त नहीं किया जा सकता। भारत की सभ्यता का मूल तत्व ही पुनर्जागरण है। यही कारण है कि हर विध्वंस के बाद भारत पहले से अधिक शक्ति और तेजस्विता के साथ खड़ा हुआ।

आज आवश्यकता इस बात की है कि सोमनाथ की यह प्रेरणा केवल मंदिरों तक सीमित न रहे, बल्कि प्रत्येक भारतीय के भीतर राष्ट्रप्रेम, सांस्कृतिक स्वाभिमान और सभ्यतागत चेतना का दीप प्रज्वलित करे। क्योंकि जो राष्ट्र अपने इतिहास, संस्कृति और आस्था को स्मरण रखता है, वही विश्व का पथप्रदर्शक बनता है।

8:18
esamachar.net

सामाचार नजर

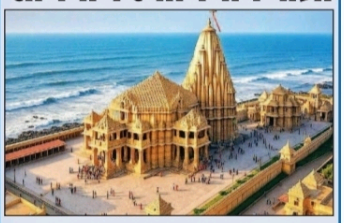

सहस्त्राब्दियों के संघर्ष, आस्था और राष्ट्रीय स्वाभिमान का जीवंत प्रतीक : सोमनाथ स्वाभिमान यात्रा

भारत की सनातन चेतना में कुछ तीर्थ ऐसे हैं, जो केवल पूजा-अर्चना के केंद्र नहीं, बल्कि राष्ट्र की आत्मा, अस्मिता और सांस्कृतिक स्वाभिमान के जीवंत प्रतीक बन जाते हैं। प्रभु सोमनाथ का पावन धाम उन्हीं दिव्य स्थलों में से एक है। समुद्र तट पर स्थित यह ज्योतिर्लिंग सदियों से भारत की आध्यात्मिक शक्ति, सांस्कृतिक निरंतरता और अदम्य आत्मबल का प्रतीक रहा है।

सोमनाथ का इतिहास केवल एक मंदिर का इतिहास नहीं, बल्कि उस सनातन चेतना का इतिहास है जिसने बार-बार आक्रमण सहकर भी स्वयं को पुनः स्थापित किया। यह वही भूमि है जहां विदेशी आक्रांताओं ने केवल पत्थरों को नहीं तोड़ा, बल्कि भारत की आत्मा को चोट पहुंचाने का प्रयास किया। किंतु हर बार भारत की आस्था पहले से अधिक तेजस्विता के साथ पुनर्जीवित होकर खड़ी हुई।

1026 ईस्वी में महमूद गजनवी द्वारा सोमनाथ मंदिर पर किया गया आक्रमण भारतीय इतिहास की उन घटनाओं में से एक है, जिसने पूरे राष्ट्र की चेतना को झकझोर दिया था। मंदिर की अपार संपदा को लूटने और सनातन आस्था को कुचलने के उद्देश्य से हुए इस विध्वंस के बावजूद भारत की आध्यात्मिक शक्ति पराजित नहीं हुई।

सोमनाथ का मंदिर अनेक बार टूटा, किंतु हर बार पुनः निर्मित हुआ। यह पुनर्निर्माण केवल स्थापत्य का पुनरुत्थान नहीं था, बल्कि भारतीय आत्मगौरव और सांस्कृतिक चेतना का पुनर्जन्म था। यही कारण है कि 'सोमनाथ स्वाभिमान पर्व' केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि सहस्त्र वर्षों के संघर्ष, तप, त्याग और राष्ट्रीय स्वाभिमान के स्मरण का महापर्व बन गया है।

8 से 11 जनवरी 2026 तक आयोजित 'सोमनाथ स्वाभिमान पर्व' उस ऐतिहासिक अवसर का प्रतीक है, जब सोमनाथ पर हुए पहले आक्रमण के एक हजार वर्ष पूर्ण हुए। यह पर्व भारत की सभ्यतागत यात्रा, सांस्कृतिक जीवटता और राष्ट्रीय पुनर्जागरण को नई पीढ़ी तक पहुंचाने का प्रयास है।

गुजरात स्थित ऐतिहासिक सोमनाथ मंदिर में आयोजित इस चार दिवसीय उत्सव में सांस्कृतिक कार्यक्रम, महाआरती, शौर्य यात्रा और विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों के माध्यम से भारत की गौरवगाथा को स्मरण किया जा रहा है। यह आयोजन राष्ट्र को यह संदेश देता है कि भारत की संस्कृति को मिटाने का हर प्रयास अंततः असफल हुआ है ।

'सोमनाथ स्वाभिमान यात्रा-2026' के माध्यम से मध्यप्रदेश ने इस राष्ट्रीय अभियान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा रानी कमलापति रेलवे स्टेशन से 1100 श्रद्धालुओं के प्रथम जत्थे को विशेष ट्रेन के माध्यम से हरी झंडी दिखाकर रवाना करना केवल एक प्रशासनिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि सनातन संस्कृति और राष्ट्रीय गौरव के प्रति प्रतिबद्धता का प्रतीक है।

मध्यप्रदेश के विभिन्न जिलों से श्रद्धालुओं की सहभागिता यह दर्शाती है कि सोमनाथ केवल गुजरात का तीर्थ नहीं, बल्कि सम्पूर्ण भारत की सांस्कृतिक चेतना का केंद्र है। दिल्ली सहित अन्य राज्यों द्वारा भी विशेष यात्राओं और श्रद्धालुओं के जत्थों का आयोजन राष्ट्रीय एकात्मता की अद्भुत मिसाल प्रस्तुत करता है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल ने सोमनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण का संकल्प लिया। यह निर्णय केवल धार्मिक आस्था का विषय नहीं था, बल्कि स्वतंत्र भारत के सांस्कृतिक आत्मसम्मान की पुनर्स्थापना का प्रतीक था। 1951 में भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद द्वारा मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा में शामिल होना भारतीय इतिहास का अत्यंत महत्वपूर्ण क्षण था। उन्होंने स्पष्ट कहा था कि कोई भी राष्ट्र अपनी सांस्कृतिक जड़ों से कटकर महान नहीं बन सकता। सोमनाथ का पुनर्निर्माण इसी राष्ट्रीय चेतना और आत्मगौरव का उद्घोष था।

आज जब वैश्विक संस्कृति और आधुनिकता के प्रभाव में नई पीढ़ी अपने इतिहास और सांस्कृतिक मूल्यों से दूर होती दिखाई देती है, तब 'सोमनाथ स्वाभिमान यात्रा' जैसे आयोजन अत्यंत प्रासंगिक हो जाते हैं। यह यात्रा केवल तीर्थाटन नहीं, बल्कि इतिहास, संघर्ष और सांस्कृतिक गौरव से नई पीढ़ी का परिचय कराने का अभियान है।

सोमनाथ का शिखर यह संदेश देता है कि भारत केवल राजनीतिक सीमाओं से बना राष्ट्र नहीं, बल्कि हजारों वर्षों की आध्यात्मिक चेतना से निर्मित एक जीवंत सभ्यता है। यह यात्रा युवाओं को यह प्रेरणा देती है कि वे अपने इतिहास को जानें, अपनी संस्कृति पर गर्व करें और राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका निभाएं।

सोमनाथ स्वाभिमान पर्व और यात्रा जैसे भव्य आयोजन के लिए भारत सरकार, संस्कृति मंत्रालय तथा सभी सहभागी संस्थाएं अभिनंदन और साधुवाद की पात्र हैं। यह पहल केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि भारत की सभ्यतागत चेतना को पुनः जागृत करने का राष्ट्रीय प्रयास है।

ऐसे आयोजन भारत की सांस्कृतिक विरासत को नई पीढ़ी तक पहुंचाने के साथ-साथ विश्व को यह संदेश भी देते हैं कि भारत की आत्मा आज भी उतनी ही जीवंत और शक्तिशाली है, जितनी हजार वर्षों पूर्व थी।

सोमनाथ का इतिहास हमें यह सिखाता है कि आस्था को दबाया जा सकता है, किंतु समाप्त नहीं किया जा सकता। भारत की सभ्यता का मूल तत्व ही पुनर्जागरण है। यही कारण है कि हर विध्वंस के बाद भारत पहले से अधिक शक्ति और तेजस्विता के साथ खड़ा हुआ।

आज आवश्यकता इस बात की है कि सोमनाथ की यह प्रेरणा केवल मंदिरों तक सीमित न रहे, बल्कि प्रत्येक भारतीय के भीतर राष्ट्रप्रेम, सांस्कृतिक स्वाभिमान और सभ्यतागत चेतना का दीप प्रज्वलित करे। क्योंकि जो राष्ट्र अपने इतिहास, संस्कृति और आस्था को स्मरण रखता है, वही विश्व का पथप्रदर्शक बनता है। लेखकः वरिष्ठ पत्रकार एवं समसामयिक विश्लेषक, सामाजिक-सांस्कृतिक चिंतन के सजग हस्ताक्षर

राजेश कुमरावत 'सार्थक'

डिजिटल युग में उ
के अधिकारों की

- उपभोक्ता शिकायत निवारण (चौथा संशोधन) विनियमन
  आमंत्रित- भारत की जवाबदेह अर्थव्यवस्था की ओर एव
- उपभोक्ता शिकायत निवारण (चौथा संशोधन) विनियमन,
  तीव्र समाधान, पारदर्शी और तकनीक- सक्षम न्याय उप

वैश्विक स्तर पर 21वीं सदी की वैश्विक अर्थव्यवस्था में उपभोक्ता केवल बाजार का अंतिम खरीदार नहीं रह गया है, बल्कि वह आर्थिक संरचना का केंद्रीय स्तंभ बन चुका है। डिजिटल कॉमर्स, ई-कॉमर्स, ऑनलाइन बैंकिंग, फिनटेक, मोबाइल एप आधारित सेवाएं, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित व्यापार मॉडल और वैश्विक उपभोक्ता नेटवर्क ने नागरिकों को अभूतपूर्व सुविधाएं प्रदान की हैं,किंतु इसके साथ ही उपभोक्ताओं के शोषण,धोखाधड़ी,गलत बिलिंग, डेटा दुरुपयोग,सेवा मेंलापरवाही और शिकायतों के अनसुलझे रहने जैसी समस्याएं भी तेजी से बढ़ी हैं। यही कारण है कि विश्वभर की सरव उपभोक्ता-केंद्रित प्रशासन की दिशा में अपने कानूनों और नियामव

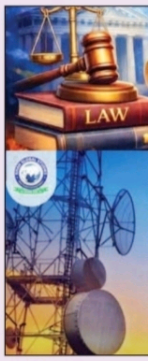

मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं क़ि इसी पृष्ठभूमि में भारतीय दूरसंचार नियामक प्राधिकरण यानें ट्राई द्वारा अप्रैल 2026 में जारी किए गए दो महत्वपूर्ण मसौदा विनियम भारत के डिजिटल भविष्य की दिशा तय करने वाले कदम माने जा रहे हैं। पहला मसौदा दूरसंचार उपभोक्ता संरक्षण (तेरहवां संशोधन) विनियम, 2026 से संबंधित है, जिसमें सुझाव देने की अंतिम तिथि 5 मई 2026 थी,उसमें वॉयस और एसएमएस पैक कोअनिवार्य रूप से उपलब्ध कराने जैसे प्रस्ताव शामिल हैं, जबकि दूसरा मसौदा उपभोक्ता शिकायत निवारण व्यवस्था को आधुनिक बनाने वाले चौथे संशोधन से जुड़ा है जिसकी जनता के द्वारा सुझाव देने की समयसीमा 5 जून 2026 निर्धारित की गई है। इन प्रस्तावों ने दूरसंचार कंपनियों, डिजिटल नीति विशेषज्ञों, उपभोक्ता संगठनों और आम नागरिकों के बीच व्यापक बहस को जन्म दिया है।जो भारतीय उपभोक्ता संरक्षण व्यवस्था को डिजिटल, पारदर्शी, समयबद्ध और जवाबदेह बनाने की दिशा में एक बड़ा सुधारवादी कदम है।भारत आज विश्व कीसबसे बड़ी डिजिटल अर्थव्यवस्थाओं में तेजी से उभरता हुआ देश है।यूनिफाइड पेमेंट इंटरफेस, ऑनलाइन शॉपिंग, डिजिटल बैंकिंग, टेलीकॉम सेवाओं और मोबाइल इंटरनेट के विस्फोटक विस्तार ने उपभोक्ता व्यवहार को पूरी तरह बदल दिया है। करोड़ों भारतीय अब घर बैठे वस्तुएं खरीदते हैं, ऑनलाइन भुगतान करते हैं, बीमा लेते हैं,ऋण प्राप्त करते हैं और सरकारी सेवाओं तक डिजिटल माध्यम से पहुंचते हैं।किंतु इस डिजिटलविस्तार के साथ उपभोक्ताओं की शिकायतें भी अभूतपूर्व रूप से बढ़ी हैं। कहीं बैंक खातों से साइबर धोखाधड़ी हो रही है, कहीं गलत बिजली बिल भेजे जा रहे हैं, कहीं ई-कॉमर्स कंपनियां रिफंड देने में महीनों लगा रही हैं, तो कहीं मोबाइल कंपनियां उपभोक्ताओं की शिकायतों का समाधान समय पर नहीं कर रही हैं। पारंपरिक उपभोक्ता शिकायत निवारण तंत्र इन चुनौतियों के सामने कमजोर और धीमा साबित हो रहा था। इसी आवश्यकता को देखते हुए यह चौथा संशोधन विनियमन सामने आया है, जिसका मूल उद्देश्य उपभोक्ताओं कोसटीकता से तेज, पारदर्शी और तकनीक- सक्षम न्याय तुरंत उपलब्ध कराना है।

शिकायत निवारण व्यवस्था को पूरी तरह डिजिटल स्वरूप देने की दिशा में आगे बढ़ता दिखाई देता है। पहले उपभोक्ताओं को शिकायत दर्ज करने के लिए विभागीय कार्यालयों के चक्कर लगाने पड़ते थे,लंबी फाइल प्रक्रिया से गुजरना पड़ता था और कई बार छोटी शिकायतें भी महीनों तक लंबित रहती थीं।नए विनियमन के तहत ऑनलाइन पोर्टल, मोबाइल एप, ई-मेल आधारित शिकायत प्रणाली और डिजिटल दस्तावेज अपलोड की सुविधा को बढ़ावा दिया गया है।इसका अर्थ यह है कि अब देश का कोई भी नागरिक अपने मोबाइल फोन से शिकायत दर्ज कर सकेगा, उसकी स्थिति ट्रैक कर सकेगा और सुनवाई की सूचना भी डिजिटल माध्यम से प्राप्त कर सकेगा। यह परिवर्तन केवल तकनीकी सुविधा नहीं है, बल्कि यह प्रशासनिक लोकतंत्रीकरण की दिशा में एक ऐतिहासिक बदलाव है, जहां नागरिकों को सरकारी कार्यालयों पर निर्भर रहने की आवश्यकता कम होगी। यह विनियमन केवल शिकायत दर्ज करने तक सीमित नहीं है, बल्कि शिकायत समाधान की समय-सीमा तय करके प्रशासनिक जवाबदेही भी सुनिश्चित करने का सटीक प्रयास करता है।

कई मामलों में शिकायतें वर्षों तक लंबित रहती थीं, जिससे उपभोक्ता न्याय व्यवस्था पर भरोसा खोने लगते थे।प्रस्तावित संशोधन में शिकायत स्वीकार करने, प्रारंभिक जांच करने और अंतिम समाधान देने की समय- सीमा निर्धारित करने पर विशेष जोर दिया गया है। यदि यह व्यवस्था प्रभावी ढंग से लागू होती है, तो यह भारतीय उपभोक्ता प्रशासनिक इतिहास में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन होगा। इससे कंपनियों और सेवा प्रदाताओं पर भी दबाव बढ़ेगा कि वे उपभोक्ता समस्याओं का समयबद्ध समाधान करें, अन्यथा उन्हें जुर्माना, दंड या मुआवजा देना पड़ सकता है।वास्तव में यह संशोधन केवल प्रशासनिक सुधार नहीं, बल्कि भारत की बदलती आर्थिक संरचना की आवश्यकता भी है। आज भारत वैश्विक निवेश का प्रमुख केंद्र बनता जा रहा है। विदेशी कंपनियां भारतीय बाजार में तेजी से प्रवेश कर रही हैं। अंतरराष्ट्रीय निवेशक भी ऐसे देशों में निवेश को प्राथमिकता देते हैं, जहां संरक्षण मजबूत हो और कानूनी ढांचा पारदर्शी हो। यूनियन, अमेरिका,जापान और ऑस्ट्रेलिया जैसे विकसित उपभोक्ता अधिकारों को अत्यंत गंभीरता से लिया जाता उपभोक्ता के साथ गलत व्यवहार करने पर कंपनियों डॉलर तक के दंड लगाए जाते हैं। भारत भी अब उसी बढ़ता दिखाई दे रहा है। उपभोक्ता शिकायत निवारण संशोधन) विनियमन, 2026 भारत को एक ऐसी अर्थव्यवस्था के रूप में स्थापित करने की दिशा में भूमिका निभा सकता है, जहां उपभोक्ता अधिकार केवल तक सीमित न रहकर व्यवहारिक रूप से लागू हों।

ई-कॉमर्स और डिजिटल प्लेटफॉर्म पर नियंत्रण को करना है। पिछले कुछ वर्षों में ऑनलाइन खरीदारी विस्फोटक गति से बढ़ी है। लेकिन इसके साथ नकली गलत डिलीवरी, रिफंड में देरी, फर्जी डिस्काउंट और उपभ के दुरुपयोग जैसी समस्याएं भी तेजी से बढ़ी हैं। अ उपभोक्ता शिकायत दर्ज करते हैं, लेकिन कंपनियां उ प्रक्रिया में उलझाकर समस्या का समाधान नहीं करतीं। संशोधन में ई-कॉमर्स कंपनियों की जवाबदेही तय करने, अधिकारी नियुक्त करने और शिकायतों की नियमित नि प्रावधान अत्यंत महत्वपूर्ण माना जा रहा है। यदि यह प्रभा लागू होता है, तो भारत का डिजिटल बाजार अधिक सुर पारदर्शी बन सकता है। आज के समय में उपभोक्ता केव नहीं खरीदता, बल्कि डिजिटल विश्वास भी खरीदता उपभोक्ता को यह भरोसा न हो कि उसकी शिकायत सुन तो पूरा आर्थिक ढांचा कमजोर पड़ सकता है। यही कार विश्व बैंक, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष और आर्थिक सह विकास संगठन जैसे वैश्विक संस्थान भी मजबूत संरक्षण व्यवस्था को आर्थिक स्थिरता का महत्वपूर्ण आध हैं। भारत का यह नया विनियमन वैश्विक मानकों के उपभोक्ता शासन प्रणाली विकसित करने की दिशा में एव सकारात्मक संकेत देता है।

भारतीय व्यवस्था में लंबे समय तक उपभोक्ता को न करने के लिए अलग से कानूनी लड़ाई लड़नी पड़ती थी। विनियमन में गलत बिलिंग, सेवा में लापरवाही, अनुचि डिजिटल धोखाधड़ी और भ्रामक विज्ञापनों के मा उपभोक्ताओं को स्वतःमुआवजा देने की अवधारणा पर गया है। यह प्रावधान यदि प्रभावी रूप से लागू होता है कंपनियों को अधिक

जिम्मेदार बनाने में बड़ी भूमिका निभा सकता उपभोक्ताओं का समय और संसाधन दोनों बचेंगे त प्रणाली पर अतिरिक्त बोझ भी कम होगा।भारत में दूरसंचार, बैंकिंग और बीमा क्षेत्र में गलत बिलिंग और सेव लगातार बढ़ रहे हैं। कई बार उपभोक्ताओं को औसत से अधिक बिल भेज दिए जाते हैं और भुगतान न करने पर करने की धमकी दी जाती है। नए विनियमन में यह प्रस्ता महत्वपूर्ण माना जा रहा है कि यदि किसी उपभोक्ता असामान्य रूप से बढ़ जाता है, तो सेवा प्रदाता को स्व करनी होगी और जांच पूरी होने तक सेवा बंद नहीं की ज यह उपभोक्ता हितों की रक्षा की दिशा में एक बड़ा कदम है भारत जैसे विशाल देश में लाखों उपभोक्ता तकनीकी त्रुटियों और प्रशासनिक लापरवाही का शिकार होते रहे हैं।

यदि क्षेत्रीय लोकपाल कार्यालय, ऑनलाइन अपील और वीडियो सुनवाई जैसी व्यवस्थाएं प्रभावी रूप से लागू होती हैं, तो उपभोक्ताओं को त्वरित राहत मिल सकती है।

घायल कर दिया था।
पा को कभी बाहरी पार्टी कहकर
नीति से दूर रखने की रणनीति
उसी भाजपा ने तृणमूल कांग्रेस
ने जाने वाले किले को ध्वस्त कर
ल चुनावी जीत नहीं, बल्कि उस
दीवार का टूटना है, जिसे दशकों
स्मता के नाम पर खड़ा किया गया
र्जी और अभिषेक बनर्जी की यह
चुनाव परिणामों को केंद्रीय बलों
सूची पुनरीक्षण के सहारे अवैध
जनता के गुस्से को और स्पष्ट
ल का मतदाता इस बार केवल
बदल रहा था, वह व्यवस्था को
था। बंगाल का राजनीतिक पतन

संपादकीय

रवीन्द्रनाथ के स्वप्न से लाल सलाम और ममता से खेला तक....

अनीता चौबे

अचानक नहीं हुआ। पहले वामपंथ ने राज्य को वैचारिक जड़ता और औद्योगिक पलायन की ओर धकेला। कभी भारत का औद्योगिक और बौद्धिक केंद्र रहा बंगाल धीरे-धीरे बंद कारखानों, बेरोजगार युवाओं और हिंसक कैडर राजनीति का प्रदेश बन गया। कम्युनिस्ट शासन ने वर्ग संघर्ष के नाम पर उद्यमिता को संदेह की दृष्टि से देखा और परिणामस्वरूप पूंजी, उद्योग और प्रतिभाएं राज्य छोड़ती चली गईं। उसके बाद ममता बनर्जी परिवर्तन का वादा लेकर आईं, लेकिन उनका शासन भी अंततः व्यक्तिपूजा, भ्रष्टाचार और सांप्रदायिक तुष्टिकरण का पर्याय बन गया। शिक्षक भर्ती घोटाले से लेकर कटमनी संस्कृति तक, बंगाल में भ्रष्टाचार एक संस्थागत व्यवस्था बन गया। हजारों योग्य युवाओं के सपनों की कीमत रिश्वत में तय होने लगी। महिलाओं की सुरक्षा के दावे खोखले साबित हुए। पुलिस और सत्ता के गठजोड़ ने अपराधियों को संरक्षण दिया। राजनीतिक हिंसा सामान्य बात बन गई। लोकतंत्र का अर्थ केवल चुनाव रह गया, शासन से नैतिकता गायब हो गई। सबसे गंभीर चोट बंगाल की सांस्कृतिक आत्मा पर हुई। जिस भूमि ने वसुधैव कुटुम्बकम और मानवीय उदारता का संदेश दिया, वहां वोट बैंक की राजनीति ने समाज को धार्मिक खांचों में बाँटना शुरू कर दिया। ममता सरकार की तुष्टिकरण आधारित राजनीति ने बहुसंख्यक समाज में असुरक्षा और उपेक्षा की भावना को जन्म दिया। बांग्लादेश में हिंदुओं पर बढ़ते अत्याचारों और सीमावर्ती क्षेत्रों में कट्टरपंथी प्रभाव ने इस चिंता को और तीखा किया। भाजपा ने इसी आक्रोश को राजनीतिक ऊर्जा में बदल दिया। लेकिन यह जीत केवल हिंदू ध्रुवीकरण की कहानी नहीं है। यह उस बंगाली मध्यवर्ग की वापसी भी है, जो अपमान, बेरोजगारी और भ्रष्टाचार से तंग आ चुका था।

सुविचार

खुशी केवल उन्हीं व्यक्तियों को प्राप्त होती है जो कि दूसरों को खुश करने के लिए प्रयासरत रहते है।
- अज्ञाते

राष्ट्रीय हिन्दी मेल 30 वां वर्ष

सोमनाथ : केवल मंदिर नहीं, भारतीय आत्मा का प्रतीक

भारत की सनातन चेतना में कुछ तीर्थ ऐसे हैं, जो केवल पूजा-अर्चना के केंद्र नहीं, बल्कि राष्ट्र की आत्मा, अस्मिता और सांस्कृतिक स्वाभिमान के जीवंत प्रतीक बन जाते हैं। प्रभु सोमनाथ का पावन धाम उन्हीं दिव्य स्थलों में से एक है। समुद्र तट पर स्थित यह ज्योतिर्लिंग सदियों से भारत की आध्यात्मिक शक्ति, सांस्कृतिक निरंतरता और अदम्य आत्मबल का प्रतीक रहा है।

सोमनाथ का इतिहास केवल एक मंदिर का इतिहास नहीं, बल्कि उस सनातन चेतना का इतिहास है जिसने बार-बार आक्रमण सहकर भी स्वयं को पुनः स्थापित किया।

यह वही भूमि है जहां विदेशी आक्रांताओं ने केवल पत्थरों को नहीं तोड़ा, बल्कि भारत की आत्मा को चोट पहुंचाने का प्रयास किया।

- समसामयिकी लेख-
राजेश कुमरावत सार्थक

किंतु हर बार भारत की आस्था पहले से अधिक तेजस्विता के साथ पुनर्जीवित होकर खड़ी हुई।

1026 ईस्वी में महमूद गजनवी द्वारा सोमनाथ मंदिर पर किया गया आक्रमण भारतीय इतिहास की उन घटनाओं में से एक है, जिसने पूरे राष्ट्र की चेतना को झकझोर दिया था। मंदिर की अपार संपदा को लूटने और सनातन आस्था को कुचलने के उद्देश्य से हुए इस विध्वंस के बावजूद भारत की आध्यात्मिक शक्ति पराजित नहीं हुई।

सोमनाथ का मंदिर अनेक बार टूटा, किंतु हर बार पुनः निर्मित हुआ। यह पुनर्निर्माण केवल स्थापत्य का पुनरुत्थान नहीं था, बल्कि भारतीय आत्मगौरव और सांस्कृतिक चेतना का पुनर्जन्म था। यही कारण है कि 'सोमनाथ स्वाभिमान पर्वज्' केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि सहस्त्र वर्षों के संघर्ष, तप, त्याग और राष्ट्रीय स्वाभिमान के स्मरण का महापर्व बन गया है।

8 से 11 जनवरी 2026 तक आयोजित 'सोमनाथ स्वाभिमान पर्वज्' उस ऐतिहासिक अवसर का प्रतीक है, जब सोमनाथ पर हुए पहले आक्रमण के एक हजार वर्ष पूर्ण हुए। यह पर्व भारत की सभ्यतागत यात्रा, सांस्कृतिक जीवटता और राष्ट्रीय पुनर्जागरण को नई पीढ़ी तक पहुंचाने का प्रयास है।

गुजरात स्थित ऐतिहासिक सोमनाथ मंदिर में आयोजित इस चार दिवसीय उत्सव में सांस्कृतिक कार्यक्रम, महाआरती, शौर्य यात्रा और विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों के माध्यम से भारत की गौरवगाथा को स्मरण किया जा रहा है। यह आयोजन राष्ट्र को यह संदेश देता है कि भारत की संस्कृति को मिटाने का हर प्रयास अंततः असफल हुआ है।

'सोमनाथ स्वाभिमान यात्रा-2026ज्' के माध्यम से मध्यप्रदेश ने इस राष्ट्रीय अभियान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा रानी कमलापति रेलवे स्टेशन से 1100 श्रद्धालुओं के प्रथम जत्थे को विशेष ट्रेन के माध्यम से हरी झंडी दिखाकर रवाना करना केवल एक

प्रशासनिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि सनातन संस्कृति और राष्ट्रीय गौरव के प्रति प्रतिबद्धता का प्रतीक है।

मध्यप्रदेश के विभिन्न जिलों से श्रद्धालुओं की सहभागिता यह दर्शाती है कि सोमनाथ केवल गुजरात का तीर्थ नहीं, बल्कि सम्पूर्ण भारत की सांस्कृतिक चेतना का केंद्र है। दिल्ली सहित अन्य राज्यों द्वारा भी विशेष यात्राओं और श्रद्धालुओं के जत्थों का आयोजन राष्ट्रीय एकात्मता की अद्भुत मिसाल प्रस्तुत करता है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल ने सोमनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण का संकल्प लिया। यह निर्णय केवल धार्मिक आस्था का विषय नहीं था, बल्कि स्वतंत्र भारत के सांस्कृतिक आत्मसम्मान की पुनर्स्थापना का प्रतीक था।

1951 में भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद द्वारा मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा में शामिल होना भारतीय इतिहास का अत्यंत महत्वपूर्ण क्षण था। उन्होंने स्पष्ट कहा था कि कोई भी राष्ट्र अपनी सांस्कृतिक जड़ों से कटकर महान नहीं बन सकता। सोमनाथ का पुनर्निर्माण इसी राष्ट्रीय चेतना और आत्मगौरव का उद्घोष था।

आज जब वैश्विक संस्कृति और आधुनिकता के प्रभाव में नई पीढ़ी अपने इतिहास और सांस्कृतिक मूल्यों से दूर होती दिखाई देती है, तब 'सोमनाथ स्वाभिमान यात्राज्' जैसे आयोजन अत्यंत प्रासंगिक हो जाते हैं। यह यात्रा केवल तीर्थाटन नहीं, बल्कि इतिहास, संघर्ष और सांस्कृतिक गौरव से नई पीढ़ी का परिचय कराने का अभियान है।

सोमनाथ का शिखर यह संदेश देता है कि भारत केवल राजनीतिक सीमाओं से बना राष्ट्र नहीं, बल्कि हजारों वर्षों की आध्यात्मिक चेतना से निर्मित एक जीवंत सभ्यता है। यह यात्रा युवाओं को यह प्रेरणा देती है कि वे अपने इतिहास को जानें, अपनी संस्कृति पर गर्व करें और राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका निभाएं।

सोमनाथ स्वाभिमान पर्व और यात्रा जैसे भव्य आयोजन के लिए भारत सरकार, संस्कृति मंत्रालय तथा सभी सहभागी संस्थाएं अभिनंदन और साधुवाद की पात्र हैं। यह पहल केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि भारत की सभ्यतागत चेतना को पुनः जागृत करने का राष्ट्रीय प्रयास है।

ऐसे आयोजन भारत की सांस्कृतिक विरासत को नई पीढ़ी तक पहुंचाने के साथ-साथ विश्व को यह संदेश भी देते हैं कि भारत की आत्मा आज भी उतनी ही जीवंत और शक्तिशाली है, जितनी हजार वर्षों पूर्व थी।

सोमनाथ का इतिहास हमें यह सिखाता है कि आस्था को दबाया जा सकता है, किंतु समाप्त नहीं किया जा सकता। भारत की सभ्यता का मूल तत्व ही पुनर्जागरण है। यही कारण है कि हर विध्वंस के बाद भारत पहले से अधिक शक्ति और तेजस्विता के साथ खड़ा हुआ।

आज आवश्यकता इस बात की है कि सोमनाथ की यह प्रेरणा केवल मंदिरों तक सीमित न रहे, बल्कि प्रत्येक भारतीय के भीतर राष्ट्रप्रेम, सांस्कृतिक स्वाभिमान और सभ्यतागत चेतना का दीप प्रज्वलित करे। क्योंकि जो राष्ट्र अपने इतिहास, संस्कृति और आस्था को स्मरण रखता है, वही विश्व का पथप्रदर्शक बनता है।

लेखक-..वरिष्ठ पत्रकार एवं समसामयिक विश्लेषक, सामाजिक-सांस्कृतिक चिंतन के सजग हस्ताक्षर

सहस्त्राब्दियों के संघर्ष, आस्था और राष्ट्रीय स्वाभिमान का जीवंत प्रतीक : सोमनाथ स्वाभिमान यात्रा

भारत की सनातन चेतना में कुछ तीर्थ ऐसे हैं, जो केवल पूजा-अर्चना के केंद्र नहीं, बल्कि राष्ट्र की आत्मा, अस्मिता और सांस्कृतिक स्वाभिमान के जीवंत प्रतीक बन जाते हैं। प्रभु सोमनाथ का पावन धाम उन्हीं दिव्य स्थलों में से एक है। समुद्र तट पर स्थित यह ज्योतिर्लिंग सदियों से भारत की आध्यात्मिक शक्ति, सांस्कृतिक निरंतरता और अदम्य आत्मबल का प्रतीक रहा है।

सोमनाथ का इतिहास केवल एक मंदिर का इतिहास नहीं, बल्कि उस सनातन चेतना का इतिहास है जिसने बार-बार आक्रमण सहकर भी स्वयं को पुनः स्थापित किया। यह वही भूमि है जहां विदेशी आक्रांताओं ने केवल पत्थरों को नहीं तोड़, बल्कि भारत की आत्मा को चोट पहुंचाने का प्रयास किया। किंतु हर बार भारत की आस्था पहले से अधिक तेजस्विता के साथ पुनर्जीवित होकर खड़ी हुई।

1026 ईस्वी में महमूद गजनवी द्वारा सोमनाथ मंदिर पर किया गया आक्रमण भारतीय इतिहास की उन घटनाओं में से एक है, जिसने पूरे राष्ट्र की चेतना को झकझोर दिया था। मंदिर की अपार संपदा को लूटने और सनातन आस्था को कुचलने के उद्देश्य से हुए इस विध्वंस के बावजूद भारत की आध्यात्मिक शक्ति पराजित नहीं हुई।

सोमनाथ का मंदिर अनेक बार टूटा, किंतु हर बार पुनः निर्मित हुआ। यह पुनर्निर्माण केवल स्थापत्य का पुनरुत्थान नहीं था, बल्कि भारतीय आत्मगौरव और सांस्कृतिक चेतना का पुनर्जन्म था। यही कारण है कि ÷सोमनाथ स्वाभिमान पर्व÷ केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि सहस्त्र वर्षों के संघर्ष, तप, त्याग और राष्ट्रीय स्वाभिमान के स्मरण का महापर्व बन गया है।

8 से 11 जनवरी 2026 तक आयोजित ÷सोमनाथ स्वाभिमान पर्व÷ उस ऐतिहासिक अवसर का प्रतीक है, जब सोमनाथ पर हुए पहले आक्रमण के एक हजार वर्ष पूर्ण हुए। यह पर्व भारत की सभ्यतागत यात्रा, सांस्कृतिक जीवटता और राष्ट्रीय पुनर्जागरण को नई पीढ़ी तक पहुंचाने का प्रयास है।

गुजरात स्थित ऐतिहासिक सोमनाथ मंदिर में आयोजित इस चार दिवसीय उत्सव में सांस्कृतिक कार्यक्रम, महाआरती, शौर्य यात्रा और विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों के माध्यम से भारत की गौरवगाथा को स्मरण किया जा रहा है। यह आयोजन राष्ट्र को यह संदेश देता है कि भारत की संस्कृति को मिटाने का हर प्रयास अंततः असफल हुआ है ।

÷सोमनाथ स्वाभिमान यात्रा-2026÷ के माध्यम से भूमिका निभाई है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा रानी कमलापति रेलवे स्टेशन से 1100 श्रद्धालुओं के प्रथम जत्थे को विशेष ट्रेन के माध्यम से हरी झंडी दिखाकर रवाना करना केवल एक प्रशासनिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि सनातन संस्कृति और राष्ट्रीय गौरव के प्रति प्रतिबद्धता का प्रतीक है।

मध्यप्रदेश के विभिन्न जिलों से श्रद्धालुओं की सहभागिता यह दर्शाती है कि सोमनाथ केवल गुजरात का तीर्थ नहीं, बल्कि सम्पूर्ण भारत की सांस्कृतिक चेतना का केंद्र है। दिल्ली सहित अन्य राज्यों द्वारा भी विशेष यात्राओं और श्रद्धालुओं के जत्थों का आयोजन राष्ट्रीय एकात्मता की अद्भुत मिसाल प्रस्तुत करता है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल ने सोमनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण का संकल्प लिया। यह निर्णय केवल धार्मिक आस्था का विषय नहीं था, बल्कि स्वतंत्र भारत के सांस्कृतिक आत्मसम्मान की पुनर्स्थापना का प्रतीक था।

1951 में भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद द्वारा मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा में शामिल होना भारतीय इतिहास का अत्यंत महत्वपूर्ण क्षण था। उन्होंने स्पष्ट कहा था कि कोई भी राष्ट्र अपनी सांस्कृतिक जड़ों से कटकर महान नहीं बन सकता। सोमनाथ का पुनर्निर्माण इसी राष्ट्रीय चेतना और आत्मगौरव का उद्घोष था।

आज जब वैश्विक संस्कृति और आधुनिकता के प्रभाव में नई पीढ़ी अपने इतिहास और सांस्कृतिक मूल्यों से दूर होती दिखाई देती है, तब ÷सोमनाथ स्वाभिमान यात्रा÷ जैसे आयोजन अत्यंत प्रासंगिक हो जाते हैं। यह यात्रा केवल तीर्थाटन नहीं, बल्कि इतिहास, संघर्ष और सांस्कृतिक गौरव से नई पीढ़ी का सोमनाथ का शिखर यह संदेश देता है कि भारत केवल राजनीतिक सीमाओं से बना राष्ट्र नहीं, बल्कि हजारों वर्षों की आध्यात्मिक चेतना से निर्मित एक जीवंत सभ्यता है। यह यात्रा युवाओं को यह प्रेरणा देती है कि वे अपने इतिहास को जानें, अपनी संस्कृति पर गर्व करें और राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका निभाएं।

सोमनाथ स्वाभिमान पर्व और यात्रा जैसे भव्य आयोजन के लिए भारत सरकार, संस्कृति मंत्रालय तथा सभी सहभागी संस्थाएं अभिनंदन और साधुवाद की पात्र हैं। यह पहल केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि भारत की सभ्यतागत चेतना को पुनः जागृत करने का राष्ट्रीय प्रयास है।

ऐसे आयोजन भारत की सांस्कृतिक विरासत को नई पीढ़ी तक पहुंचाने के साथ-साथ विश्व को यह संदेश भी देते हैं कि भारत की आत्मा आज भी उतनी ही जीवंत और शक्तिशाली है, जितनी हजार वर्षों पूर्व थी।

सोमनाथ का इतिहास हमें यह सिखाता है कि आस्था को दबाया जा सकता है, किंतु समाप्त नहीं किया जा सकता। भारत की सभ्यता का मूल तत्व ही पुनर्जागरण है। यही कारण है कि हर विध्वंस के बाद भारत पहले से अधिक शक्ति और तेजस्विता के साथ खड़ा हुआ।

आज आवश्यकता इस बात की है कि सोमनाथ की यह प्रेरणा केवल मंदिरों तक सीमित न रहे, बल्कि प्रत्येक भारतीय के भीतर राष्ट्रप्रेम, सांस्कृतिक स्वाभिमान और सभ्यतागत चेतना का दीप प्रज्वलित करे। क्योंकि जो राष्ट्र अपने इतिहास, संस्कृति और आस्था को स्मरण रखता है, वही विश्व का पथप्रदर्शक बनता है। लेखक- वरिष्ठ पत्रकार एवं समसामयिक विश्लेषक, सामाजिक-सांस्कृतिक चिंतन के सजग